



महात्मा-गाँधी-केन्द्रीय-विश्वविद्यालयः
संस्कृतविभागः

M.A.& M.Phil./Ph.D. (Core Paper) in Sanskrit

पाठ्यशीर्षकम् – पाण्डुलिपिविज्ञानं-
समीक्षात्मकग्रन्थसम्पादनञ्च

(Manuscriptology & Critical Text-editing)

पाठ्यकूटसङ्केतः – SNKT2005&SNKT5002

विषयः भारतीयबौद्धिकपरम्परायां लिपिकाराः

Topic-(SCRIBES IN INDIAN INTELLECTUAL TRADITION)

अध्यापकः – डा. अनिलप्रतापगिरिः

NATURE OF ERRORS IN MANUSCRIPTS

बिन्दु-दुर्लिपि-विसर्ग-वीथिका-शृङ्ग-पषिट-पाठभेद-दूषणम्।

हस्तवेगजम्-अबुद्धिपूर्वकं-क्षन्तुमर्हथ समीक्ष्य सज्जनाः॥-

Ms. Tanjore, D.687:D.C.I.469

Errors relating to Dots, Illegibility, Visarga, Spacing, Serifs, Alignment, and Word splitting, caused by fast of the hand and by thoughtlessness, Oh gentlemen! Please pardon.

The nature of scribes

- भुग्नपृष्ठकटिग्रीवःतुल्यदृष्टिरधोमुखः।
कष्टेन लिखितं ग्रन्थं यत्नतःपरिपालयेत्॥

A scribe set on the floor, along-with flexed knees and bent back, looking down, his intent gaze alternating from original to copy, and writing for hours at a stretch. This manuscript is written with difficulty and conserved throughout effort.

1. Qualifications of a scribe

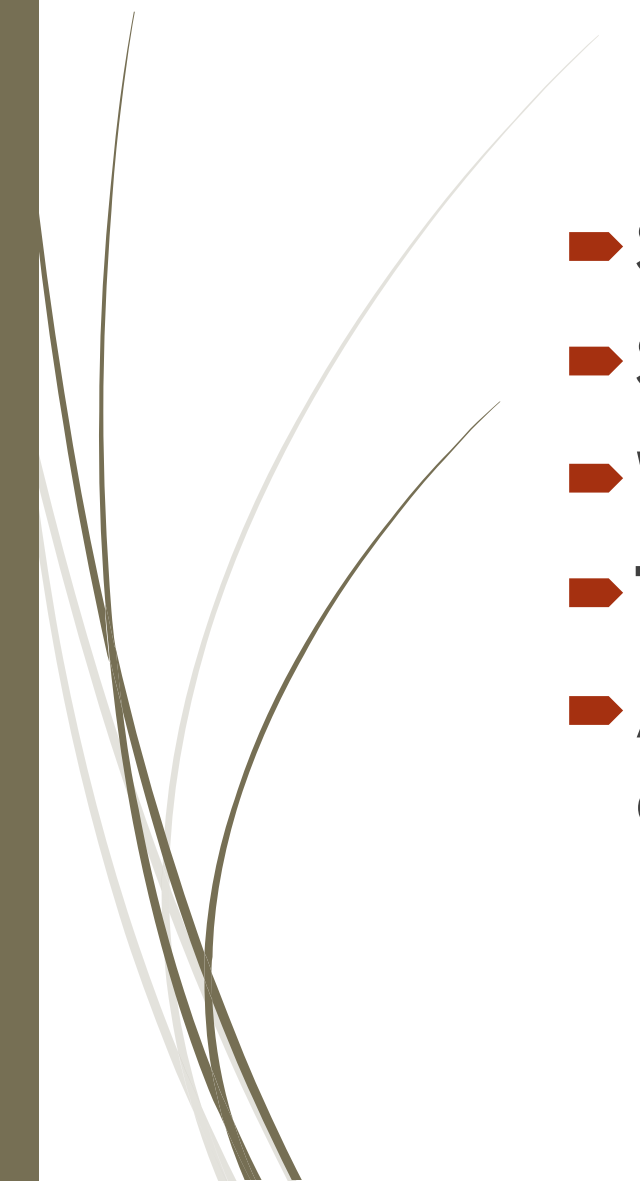
सर्वदेशाक्षराभिज्ञः सर्वशास्त्रविशारदः।
लेखकः कथितो राज्ञः सर्वाधिकरणेषु वै ॥
उपायवाक्यकुशलः सर्वशास्त्रविशारदः।
बह्वर्थवक्ता चाल्पेन लेखकः स्यान्नृपोत्तम ॥
नानाऽभिप्रायतत्त्वज्ञो देशकालविभागवित्।
अनाहार्यो नृपे भक्तो लेखकः स्यान्नृपोत्तम ॥ – मत्स्य पुराण

2. Qualifications of a scribe

- मेधावी वाक्पटु प्राज्ञः सत्यवादी जितेन्द्रियः।
 - सर्वशास्त्रसमालोकी ह्येष साधुस्सलेखकः ॥ गरुड़पुराण
- अर्थात् लेखक - मेधावी, वाक्पटु, प्रतिभासंपन्न, सत्यवादी, जितेन्द्रिय एवं सर्वशास्त्रपारंगत होना चाहिए। जो लिपिकार सर्वशास्त्र विशारद नहीं, प्रतिभाशाली नहीं, सुलेख में दक्ष नहीं, नानादेशों के लिपियों का ज्ञाता नहीं तो निश्चय ही वह त्रुटिपूर्ण पांडुलिपियां बनाएगा।



3. Qualifications of a scribe

- **Scribe must possess a legible hand.**
 - **Scribe must have attractive writing quality.**
 - **Writing should be uniform and thick.**
 - **The letters should not be too broad or too thin.**
 - **All parts of the letters inscribed fully and the dots and conjunctions marked clearly.**
- 

Manner of writing is शुभं,शलक्षणं रम्यं च।

-चतुर्वर्गचिंतामणिदानखंड

नातिकृशैर्नातिदीर्घैर्ह्रस्वदीर्घादिलक्षितैः।

सम्पूर्णावयवैर्मात्राबिन्दुसंयोगलक्षितैः॥

-हयशीर्ष-पञ्चरात्र,2.31.11.

Qualification of Master scribe

शीर्षोपेतान् सुसम्पूर्णान् शुभश्रेणीगतान् समान्।
अक्षरान्वै लिखेद्यस्तु लेखकस्स वरः स्मृतः ॥

- With proper upper strokes,
- fully outlined,
- in straight rows and equal sized
- he who inscribes in this manner is master scribe

Definition of scribe in चाणक्यसंग्रह

सकृदुक्तगृहीतार्थो लघुहस्तो जिताक्षरः।

सर्वशास्त्रसमालोकी प्रकृष्टो नाम लेखकः॥

-चाणक्यसंग्रह-219

बोले गये अर्थ को शीघ्र ही ग्रहण करने वाला, तेज़ी से लिखने वाला, सुलेख वाला, सभी शास्त्रों का अवलोकन करने वाला लेखक होता है।


Definition of the best scribe

- ▶ तथा सम्पूजयेद् वत्स लेखकं शास्त्रपारगम्।
छन्दोलक्षणतत्त्वज्ञं सत्कविं मधुरस्वरम्॥
प्रणष्टं स्मरति ग्रन्थं श्रेष्ठं पुस्तकलेखकम्।

A scribe had to know the meters and be a poet himself so as to understand and transcribe. He should have the sagacity to decipher smudged writing and reconstruct minor omissions in the archetype.



Types of scribes

1. **Pustaka –Lekhaka** or scribes of manuscripts
 2. **Kayastha-lekhaka** or writers of accounts.
 3. **Shashana- lekhaka** or Royal scribes
- 

1. Pustaka –Lekhaka or scribes of manuscripts

पुस्तके लिखितं यादृक् तादृशं लिखितं मया।
तथापि यो मे व्यत्यासो लेखने क्रियतां क्षमा॥

पुस्तक में जिस प्रकार से लिखा गया था, उसी प्रकार से मैंने लिखा, फिर भी यदि दोष मेरे लिखने में हुआ है, (उसके लिए) मुझे क्षमा करें।

Undertaking of Pustaka-lekhaka for no error from his side

यद्दृशं पुस्तके दृष्टं ताद्दृशं लिखितं मया

अबद्धं वा सुबद्धं वा मम दोषो न विद्यते।।

जिस रूप में पुस्तक में देखा उसे रूप में मेरे द्वारा लिखा गया शुद्ध है अथवा अशुद्ध (इसमें) मेरा दोष (इसमें) नहीं है।



The Scribe indicates the technics of manuscripts preservation:

तैलाद्रक्षेत् जलाद्रक्षेत् रक्षेत् श्लथबन्धनात्।
मूर्खहस्ते न दातव्यम् एवं वदति पुस्तकम्॥
अर्थात्-तेल से रक्षा, जल से रक्षा, ढीले बंधन से
रक्षा, मूर्ख के हाथ में न दिए जाने योग्य को
पुस्तक कहते हैं।

Pray to pardon for scribal errors

► विसर्गबिन्दुमात्राणि पदपादाक्षराणि च।
न्यूनानि चातिरिक्तानि क्षमस्व पुरुषोत्तम॥

विसर्ग, बिंदु, मात्रा, पद, पाद, और अक्षर न्यून हों या अधिक हों । हे पुरुषोत्तम! मुझे क्षमा करें।

Pardon for Scribal Errors

► दीर्घबिन्दुविसर्गाणामक्षराणां च विस्मृतिः।

यद्यस्ति दृष्ट्वा दयया क्षन्तुमर्हथ सज्जनाः ॥

दीर्घस्वर, बिंदु, विसर्ग, अक्षरों का लोप यदि (लेखन में दिखता है) तो हे सज्जन((विद्वज्जन), उसे देख करके अनुकंपा पूर्वक क्षमा करें।


Kayastha-lekhaka or writers of accounts.

- The Kayasthas are a much Maligned class. Their duties as money lenders, treasures and accountants.

काकाल्लौल्यं यमात् क्रौर्यं स्थपतेः स्थितघातिताम्
एकैकाक्षरमादाय कायस्थः केन निर्मितः॥



Shashana- lekhaka or Royal scribes

- The Royal scribe was a class by himself. As the pen- wielder of royalty, he had always to be attendant at the court, had to hold the confidence and trust of the King, exercised much of power and commanded great respect.**
- 

Kautilya says for Royal scribe

- तस्मादमात्यसम्पदोपेतः सर्वसमयविद् आशुग्रन्थः चार्वक्षरो लेखनवाचनसमर्थो लेखकः स्यात्।

Scribe should be endowed with the qualifications of the minister, and in addition, he should be conversant with all general conventions, quick in composing, possesses a beautiful handwriting, be efficient in deciphering and reading out documents.



The Royal scribes grasp the central idea for writing

- निन्दा प्रशंसा पृच्छा च तथाख्यानमथार्थना
- प्रत्याख्यानमुपालम्भः प्रतिषेधो अथ चोदना।
- सान्त्वमभ्युपपत्तिष्ठा भर्त्सनानुनयौ तथा
- एतेष्वर्थाः प्रवर्तन्ते त्रयोदशसु लेखजाः॥

References & Recommended Readings

- **Murthy,Srimannarayana,Methodology in Ideological Research, Delhi:Bharatiya Vidya Prakashan,1990.**
- **2. Murthy,R.S.Shivaganesh,Introduction to Manuscriptology,Sharada Publication House,Delhi-110035,1996.**
- **3.Katre,S.M.(with P.K.Gode),Introduction to Indain Textual riticism,Poona:Deccan College,1954.**
- **4. Thaker,Jayant P., Manuscriptology and Text Criticism, Oriental Institute, Baroda.**
- **5.Pandurangi,K.T.Wealth of Sanskrit Manuscripts in India & Abroad,Bangalore.**
- **6. Buhler G, Indian Paleography, Munshiram Manoharam lal, New Delhi**
- **7. Siniruddha Dash, Editor, New lights on manuscriptology, a collection of articles of Professor KV Sharma, Shri Sarada education Society research Centre Adyar Chennai 2007.**



FOR

**Questions
Comments
Suggestions**

Contact:

Dr.ANIL PRATAP GIRI

ASSOCIATE PROFESSOR

DEPARTMENT OF SANSKRIT

MAHATA GANDHI CENTRAL UNIVERSITY

Mob.7200526855

Email : anilpratapgiri@mgcub.com





THANK YOU